डॉ. आशा भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

B.A. Part – II
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper – IV

Date :- 10-02-2023

अजातशत्रु का उद्देश्य

प्रसाद के नाटकों का मुख्य उद्देश्य प्राचीन भारतीय संस्कृति का चित्रण करना है। अतीत की गौरवपूर्ण झाँकी प्रस्तुत करते समय प्रसाद ने वर्तमान को श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा दी है। डा. महानन्द वर्मा का मत है- "प्रसाद की समस्त रचनाओं के पीछे एक स्वस्थ दृष्टिपूर्ण परिस्थितियों के बीच सुख प्राप्ति, समाजोत्कर्ष, देश-प्रेम, रूढ़िवाद का नाश, प्राचीन भारतीय संस्कृति का आदर्श रूप, नारी गौरव आदि आदर्शपूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति प्रसाद जी के साहित्य में यत्र-तत्र देखने को मिलती है।"

उनके 'अजातशत्रु' नाटक में कोई एक उद्देश्य न होकर कई उद्देश्य दिखाई देते हैं। प्रथम तो उन्होंने उस समय के समाज पर बौद्ध संस्कृति के प्रभाव का चित्रण किया है। दूसरे, उन्होंने राजनीतिक सफलता-असफलता, षडयंत्र आदि को दिखाकर वर्तमान के लिए संदेश प्रस्तुत किया है। क्योंकि मानव ने सदैव ही अतीत से प्रेरणा पाकर वर्तमान को संवारा है। अतः उद्देश्य की दृष्टि से यह नाटक आज भी प्रासंगिक है।